

३६

जैन न्याय पारिभाषिक कोश

जो वादी को सिद्ध करने के लिये अभिमत है, वह 'अभिप्रेत' होता है।

अभेदस्वभाव

- गुणगुण्याद्येकस्वभावादभेदस्वभावः।

(आ.प. 113)

गुण और गुणी का एक स्वभाव होने से 'अभेदस्वभाव' है।

अमूर्त

- जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहि होंति ते मुत्ता।

(पंचा. 89)

जो पदार्थ जीवों के इन्द्रियग्राह्य विषय हैं, वे मूर्त होते हैं।

- रूपादिगुणविरहाद् अमूर्ताः।

(स.सि. 5/39/602)

रूप आदि गुण से रहित होने से (पदार्थ) 'अमूर्त' होते हैं।

अमूर्तत्व

- अमूर्तस्य भावोऽमूर्तत्वं रूपादिरहितत्वम्।

(आ.प. 104)

अमूर्त के भाव को अर्थात् स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से रहितपने को 'अमूर्तत्व' कहते हैं।

अयथार्थ ज्ञान के भेद

- अयथार्थं च विपर्ययसंशयाऽनध्यवसायाः।

(भि.न्या. 1/11)

अयथार्थ ज्ञान के तीन भेद हैं—विपर्यय, संशय और अनध्यवसाय।

अयुतसिद्धत्व

- वैशेषिकशास्त्रे हि प्रसिद्धम्—'अपृथगाश्रय-वृत्तित्वम् अयुतसिद्धत्वम्'।

(आप्त. 44, पृ. 110)

वैशेषिक शास्त्र में प्रसिद्ध है—अपृथक् (रूप से एक) आश्रय में रहना 'अयुतसिद्ध' पना है (अर्थात् जिन दो पदार्थों) की अभिन्न (यानी एक) आश्रय में वृत्ति, स्थिति होती है, वे 'अयुतसिद्ध' हैं।

अयुतसिद्धि

- समवर्तित्वलक्षणसमवायभाजाम् अयुतसिद्धिरेव, न पृथग्भूतत्वम् इति।

(पंचा.त.प्र. 50)

(अनादि-अनन्त) सहवृत्ति होना—यही 'समवाय' है, ऐसा समवाय जिनमें (जैसे—द्रव्य व गुण में) है, वहां उनकी अयुतसिद्धि ही है, अर्थात् उनका कभी भी पार्थक्य नहीं है।

अयोगव्यवच्छेद

- विशेषणसंगतैवकारोऽयोगव्यवच्छेदबोधकः। यथा—शंखः पाण्डुर एवेति।

अयोगव्यवच्छेदो नामउद्देश्यतावच्छेदकसमानाध-करणाभावाप्रतियोगित्वम्।

(स.भ.त. 39)

विशेषण से अन्वित एवकार अयोगव्यवच्छेदक होता है। जैसे—शंख पाण्डुर (सफेद) ही होता है। अयोगव्यवच्छेद से तात्पर्य है—उद्देश्यतावच्छेदक के समानाधिकरण अभाव का प्रतियोगी न होना।

(द्रष्टव्य : अन्ययोगव्यवच्छेद)